विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग -दशम

विषय- हिंदी

अभ्यास सामग्री

सुप्रभात बच्चों

आज की कक्षा में आज आपको एक मजेदार कार्य दिया जा रहा है ।

आज आपको प्रश्न ना देकर उत्तर दिए जा रहे हैं , जिस को पढ़कर आपको उससे संबंधित प्रश्न बनाने के लिए दिए जा रहे हैं । है न मजेदार कार्य !

खंड 'घ' नेताजी का चश्मा

(स्वयं प्रकाश)

अभ्यास-कार्य—125

(क) 1. हालदार साहब कस्बे से निकलकर कस्बे के मुख्य चौराहे पर लगी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति के विषय में सोच रहे थे।

2. हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों का नेताजी की मूर्ति चौराहे पर लगाने का प्रयास सराहनीय लगा, क्योंकि इससे कस्बे के नागरिकों की देशभक्ति की भावना का परिचय मिलता था और हालदार साहब के मन में भी यही भावना थी।

3. यह हालदार साहब ने कहा, क्योंकि वे देखते थे कि लोगों में देशभक्ति की भावना समाप्त होती जा रही थी और यदि कोई देशभक्ति की बात करता या कार्य करता, तो लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे।

4. दूसरी बार मूर्ति देखने पर हालदार साहब को मूर्ति पर लगा चश्मा बदला हुआ दिखाई दिया।

(ख) 1. हालदार साहब को हर बार कस्बे से गुज़रते समय चौराहे पर रुकने, पान खाने और फिर नेताजी की मूर्ति को ध्यान से देखने की आदत पड़ गई थी।

2. हालदार साहब जब भी कस्बे से गुज़रते हुए नेताजी की मूर्ति को देखते, हर बार मूर्ति पर लगा चश्मा बदला हुआ होता। हालदार साहब को इसका कारण जानने का कौतूहल था। हर बार मूर्ति का चश्मा परिवर्तित होने से यह कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा।

3. हालदार साहब ने पानवाले से पूछा कि नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है।

4. पानवाले का व्यक्तित्व बहुत रोचक था। वह एक काला, मोटा और खुशमिज़ाज आदमी था। उसके मुँह में हर वक्त पान ठुँसा रहता था।

5. हालदार साहब के प्रश्न पर पानवाले की प्रतिक्रिया उपहास एवं उपेक्षा से भरी थी। उनका प्रश्न सुनकर वह पान खाते-खाते आँखों-ही-आँखों में हँसने लगा।

अभ्यास-कार्य—126

1\. 1. हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। पानवाले ने मूर्ति पर चश्मा लगाने वाले कैप्टन का लँगड़ा कहकर मज़ाक उड़ाया था।

2. पानवाले द्वारा कैप्टन के विषय में बताए जाने पर हालदार साहब ने सोचा था कि वह अवश्य ही कोई देशभक्त फ़ौजी या आज़ाद हिंद फ़ौज का सदस्य रहा होगा, जो चश्मे की दुकान चलाता होगा। किंतु जब उन्होंने कैप्टन के रूप में एक अत्यंत कमज़ोर, लँगड़े और फेरी लगाने वाले व्यक्ति को देखा, तो वे आश्चर्यचकित रह गए।

3. बूढ़ा-मरियल आदमी फेरी लगाकर चश्मे बेचने का काम करता था।

4. हालदार साहब कैप्टन के रूप में एक बूढ़े, कमज़ोर और अपाहिज व्यक्ति को देखकर सोच में पड़ गए कि इसे कैप्टन क्यों कहते हैं, क्या यही इसका वास्तविक नाम है या इसका कोई और कारण है।

1\. सेनानी न होते हुए भी संभवत: चश्मेवाले की देशभक्ति की भावना के कारण लोग उसे 'कैप्टन' कहते होंगे। चश्मेवाले के मन में देशभक्तों और शहीदों के लिए अगाध श्रद्धा थी। इसी भावना के कारण वह नेताजी की मूर्ति को चश्मे के बिना देखता, तो उस पर चश्मा पहना देता। संभव है, नेताजी के प्रति उसकी यह भावना देख लोग उसे 'कैप्टन' कहते हों, क्योंकि नेताजी ने स्वयं आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना की थी और इसीलिए लोगों ने एक फ़ौजी की तरह ही चश्मेवाले को कैप्टन नाम दे दिया होगा।